BELIEVERS EASTERN CHURCH

Office of the Metropolitan, Synod Secretariat, Thiruvalla, Kerala, India.

चरवाहे का पत्र

Sept/Oct 2019

✠पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा हो।

मसीह में मेरे प्रिय भाइयों और बहनों,

बारेक्मोर! त्रिएक परमेश्वर के नाम में आपको अभिवादन!

आपके आध्यात्मिक पिता होने के नाते मेरे मन का बोझ यह है कि हम एक ऐसी कलीसिया बन जाएं जो प्रार्थना करती है। हमारी कलीसिया प्रार्थना के माध्यम से आरम्भ किया गया था, और इसे प्रार्थना में जारी रखा जाना चाहिए। यही कारण है कि हमारे कलीसिया के मार्गदर्शक सिद्धांत में से एक यह है कि प्रार्थना के लिए पूरी तरह समर्पित हो।

परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के काम करने से पहले प्रार्थना करनी चाहिए। एक कलीसिया जो प्रार्थना की शक्ति पर ज़ोर नहीं देती, वह प्रार्थना के माध्यम से होनेवाले परमेश्वर की सामर्थ्य से चूक जाएगा। वास्तविक रूप में, एक कलीसिया जो प्रार्थना के लिए समर्पित नहीं है वह अंत में मृत हो जाएगी।

इसलिए, मैं प्रार्थना के बारे में इस पत्र में आपसे बात करने की इच्छा करता हूं।

साधारण रूप से प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ने से हम पाते हैं कि आरम्भिक कलीसिया प्रार्थना के लिए *समर्पित* थी (प्रेरितों के काम २:४२)! समर्पित होने का अर्थ है "एक विशेष उद्देश्य या गतिविधि के लिए अपना समय और कार्यशक्ति को त्यागना ।" सब कुछ उनके प्रार्थना के जीवन से किया गया। शायद इसीलिए सभी स्थितियों में प्रार्थना का उल्लेख लगभग 100 बार प्रेरितों के काम की पुस्तक में किया गया है। निम्नलिखित बाइबल के पदों पर ध्यान दें ।

- “वे एक साथ एक चित होकर प्रार्थना में लगे रहे” और “प्रार्थना करने में लौलीन रहे”।
- “जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह स्थान जहां वे इकटठे थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे”।
- प्रेरितों 4:8, 14 में, हम कलीसिया को पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लेने के लिए *प्रार्थना* करते हुए और लोगों पर हाथ रखते हुए देखते हैं।

- प्रेरितों 7:59 में स्तिफनुस को पत्थरवाह किए जाने के बारे में पढ़ा है। इस कठिन परीक्षा में, स्टीफन ने परमेश्वर से *प्रार्थना* किया। मारे जाने के समय की प्रार्थना के बारे में कल्पना करें!
- प्रेरितों 9:11 में शाऊल दमिश्क के मार्ग पर मसीह के साथ मुठभेड़ के बाद *प्रार्थना* कर रहा है।
- प्रेरितों 9:40 में पतरस *प्रार्थना* करता है और एक मृत स्त्री को ज़िंदा किया जाता है।

इसलिए, अब सवाल यह है कि मुझे क्या करना चाहिए? एक कलीसिया के रूप में हम इसका अभ्यास कैसे कर सकते हैं? मैं कुछ सुझाव दे रहा हूं।

I. प्रार्थना की आदत डालें:

ए. हमारी पहली प्रतिक्रिया प्रार्थना हो: जब हमें अपने जीवन में किसी भी तरह की स्थिति का सामना करना पड़ता है, तो हमारी सबसे पहली प्रतिक्रिया प्रार्थना होनी चाहिए! बाइबल इसे स्पष्ट रूप से हमें हमारे जीवन की हर स्थिति के बारे में प्रार्थना करने के लिए कहती है।

ब. दूसरों के लिए प्रार्थना करने के लिए हर अवसर का उपयोग करें: जब एक भाई या बहन आपसे उस मुश्किल स्थिति के बारे बताता है जिसका सामना वह कर रहा या कर रही है, तो उसी समय प्रार्थना करने का अवसर सुनिश्चित करें। प्रार्थना के लिए एक और समय की प्रतीक्षा न करें। तब और वहीं प्रार्थना करें।

यीशु ने कहा: "मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा" और पवित्र शास्त्र हमें याद दिलाती है कि "तुम्हें इसलिए नहीं मिलता कि तुम मांगते नहीं।" विश्वासियों की प्रार्थना में सामर्थ्य है।

सी. प्रार्थना करें, प्रार्थना करें और प्रार्थना करें: प्रार्थना के साथ अपने दिन को आरम्भ करें और प्रार्थना के साथ दिन समाप्त करें। काम पर जाने से पहले प्रार्थना करें (चाहे आप कंपनी में काम करते हैं या धान के खेत में या वाहन चलाते हैं); भोजन करने से पहले प्रार्थना करें; यदि आप एक छात्र हैं, तो आप परीक्षा लिखने से पहले प्रार्थना करें; नौकरी से साक्षात्कार के लिए जाने से पहले प्रार्थना करें; महत्वपूर्ण कार्य करने से पहले प्रार्थना करें; अपनी यात्रा से पहले प्रार्थना करें; प्रार्थना करने के लिए सभी अवसरों का उपयोग करें और परमेश्वर को स्मरण करके सारे काम करें। और याद रखें, प्रार्थना के बाद, स्वयं पर क्रॉस का चिन्ह बनाएं — यह दूसरों के लिए एक गवाही है!

डी. प्रार्थना के समय: व्यक्तियों, समुदायों और हमारे कार्यालयों में, हम प्रार्थना के समयों का पालन करें, जहाँ हम अपनी सभी गतिविधियों को रोकते हैं और अब तक जो हमने किया है और करने की कोशिश करते हैं उसके लिए प्रार्थना करते हैं और उसके परमेश्वर की आशिष की याचना करते हैं।

II. प्रार्थना का माहौल बनाएं:

हमें बताया गया है, "निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो", जिसका अर्थ है कि प्रार्थना हमारे जीवन का निहायत माहौल बन जानी चाहिए, जो हमारे दिन के प्रत्येक क्षण को कवर करती है। यहाँ कुछ तरीके हैं जिनसे हम अपने जीवन में व्यावहारिक रूप से ऐसा कर सकते हैं।

1. हमारे परिवारों में: प्रत्येक परिवार को हर दिन प्रार्थना के लिए एक समय निर्धारित करना चाहिए, जहां सभी सदस्य एक साथ इकट्ठा होते हैं और विभिन्न विषयों के लिए प्रार्थना करते हैं। इसके विषय में मैंने पहले ही एक वीडियो भेजा था और मुझे कई रिपोर्ट मिलीं जिसमें कई परिवारों ने पारिवारिक प्रार्थना शुरू की है। पारिवारिक प्रार्थना के दौरान, आप किन विषयों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं?
   a. क्या आप अपने परिवार के कुछ सदस्यों के बारे में चिंतित हैं जो परमेश्वर को नहीं जानते हैं? क्या आप इस बात की चिंता करते हैं कि आप अपने परिवार की जरूरतों का ख्याल कैसे रखेंगे? इन समस्याओं के लिए हमारी पहली प्रतिक्रिया प्रार्थना करने की होनी चाहिए। याकूब 5:16 हमें बताता है कि "धर्मीजन की प्रार्थना शक्तिशाली और प्रभावी है"।
   b. उन 10 दोस्तों या रिश्तेदारों के नाम लिखिए जो परमेश्वर को नहीं जानते हैं और उनके उद्धार के लिए प्रतिदिन प्रार्थना करें।
   c. जब भी अखबार, रेडियो या टीवी से प्राकृतिक आपदाओं, कुछ समुदायों या देशों में बड़ी अशांति की रिपोर्ट हमें मिलता है, तो उन रिपोर्टों को प्रार्थना के अनुरोध के रूप में लें और प्रार्थना करने के लिए कुछ मिनट लें।
   d. प्रतिदिन अपने याजक, उनके परिवार और उनकी सेवकाई के लिए प्रार्थना करें—उन स्थानों के लिए जहां वे जाते हैं, उन परिवारों के लिए जिन्हें वे सुसमाचार सुनाते हैं, उनके लिए प्रार्थना करें।
2. एक प्रार्थना करनेवाली कलीसिया बनें: एक कलीसिया के रूप में, हमें एक प्रार्थना करनेवाली कलीसिया के रूप में जानी जाए। इसके लिए हम सब क्या कर सकते हैं?
   a. एक कलीसिया के रूप में, हर हफ्ते उपवास और प्रार्थना करने के लिए एक दिन निर्धारित करें, उन लोगों के लिए कलीसिया खोलें जो एक साथ इकट्ठा होने और सुबह से दोपहर तक प्रार्थना करने के लिए तैयार हैं।
   b. महीने में कम से कम एक बार आपकी कलीसिया में उपवास प्रार्थना करें।
   c. रविवार की आराधना के दौरान, विशेष प्रार्थना निवेदनों के लिए 10 मिनट मध्यस्थता की प्रार्थना के लिए समय निर्धारित करें।

d. विभिन्न आवश्यकताओं वाले लोगों के लिए प्रार्थना के लिए एक विशेष समय निर्धारित करें — जैसे बीमारी और उनके जीवन की अन्य समस्याएं।

e. अपने कलीसिया में एक (चेन–प्रेयर) लगातार चलनेवाली प्रार्थना का आयोजन करें।

f. प्रेयर वॉक करें, विश्वासियों की टीमें समुदाय के विभिन्न स्थानों पर घूमें और अपने गांव या कस्बे के लिए शांति और समृद्धि की प्रार्थना करें।

g. पड़ोस में बीमार और पीड़ितों के पास जाएँ, विश्वास के साथ प्रार्थना करने वाले पहले व्यक्ति बनें। संत मरकुस 11:24 — "मैं तुम से कहता हूं, कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगो, तो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिए हो जाएगा"।

h. एक कलीसिया होने के नाते हमें उनके लिए प्रार्थना करनी है जो हमारा नेतृत्व करते हैं - राष्ट्रपति, हमारे प्रधान मंत्री और उनके मंत्रिमंडल के सदस्य, हमारे राज्यपाल, मुख्यमंत्री और अन्य मंत्री, हमारे स्थानीय सरकार के नेता आदि। बाइबल हमें ऐसा करने के लिए कहती है (1 तीमु 2:2)

मसीह में प्रिय भाइयों और बहनों, विश्वासियों की प्रार्थना के द्वारा ही आरम्भिक कलीसिया के जीवन और सामर्थ्य को देखते हैं! चाहे समय अच्छा हो या बुरा, उत्पीड़न या प्रशंसा, आरम्भिक कलीसिया के विश्वासी प्रार्थना के लिए समर्पित थे! और इसी वजह से उन्होंने चंगाईयों और आश्चर्यकर्मों को होते हुए देखे; हज़ारों लोगों ने परमेश्वर के प्रेम को जाना और जब कलीसिया सबसे बुरे सताव से होकर गुज़रा उन्हें सहने के लिए अनुग्रह दिया गया।

हमारी प्रार्थनाओं के लिए एक कलीसिया और व्यक्तियों, समुदायों, कलीसियाओं के रूप में हम जाने जाएं।

परमेश्वर की आपार अनुग्रह आप सबके साथ हो!

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में, आमीन✠

✠मोरान मॉर एथनेशियस योहान । मेट्रोपॉलिटन